।। अथ साध भेद को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ साध भेद को अंग लिखंते ||

|| चौपाई ||

ना मैं हेत बेर नहिं बांधु || ना मैं जाच अजाची ||
ना मैं अडु मुडु नही कोई || ना मैं बाच अबाची || १ ||

मेरा किसी से हेत है न बेर है,न मैं मांगता हुँ न बिना मांगे रहता हुँ,न मैं अड्ता हु न मैं मुड्ता हुँ ,न मैं बाचता हुँ न मैं बिना बाचे रहता हुँ । ||१||

ना मैं सिध रिध नहि नासत || ना मैं असत न साचा ||
ना मैं घडुं घडाऊँ नाही || ना मैं खरा न काचा || २ ||

न मैं सिद्ध हुँ,न मैं रिद्ध हुँ,न मैं सत हुँ,न मैं असत हुँ,न मैं साचा हुँ,न मैं घड्ता हुँ,न मैं घड्वाता हुँ,न मैं खरा हुँ,न मैं खोटा हुँ । ||२||

ना मैं बाद विरोधी समता || ना मैं सुखि न दुखिया ||
ना मैं चलू न अबचल नांही || ना मैं रेत ना मुखिया || ३ ||

मेरे वाद विवाद मे विरोध नही है,न ही समता है,न मैं सुखी हुँ,न मैं दु:खी हुँ,न मैं चलता हुँ,न मैं अचल हुँ,न मैं प्रजा हुँ,न मैं राजा हुँ । ||३||

ना मैं धर्म कर्म मे नाही || ना आचार न मेला ||
तिरिया नार नहिं मैं पुरूषा || ना मैं ऊलन पेला || ४ ||

न मैं कोई धर्म में हुँ,न मैं कर्म करनेमे हुँ,न मैं आचारी हुँ,न मैं मेला याने बिना आचार का हुँ,न मैं स्त्री हुँ,न मैं पुरुष हुँ,न मैं ऊली तरफहुँ,न मैं पेली तरफ हुँ । ||४||

ना मैं गांव जंगळ नहिं रोही || ना मैं गृहि न त्यागी ||
ना मैं भेष जगत सो नाही || ना मुझ आड न भागी || ५ ||

न मैं गांव मे हुँ,न मैं जंगल मे हुँ,न मैं रास्ते मे हुँ,न मैं गृहस्थी हुँ,न मैं त्यागी हुँ,न मैं भेषधारी हुँ,न मैं संसारी हुँ,न मेरे कोई आड है,न मेरी आड भागी हुँ । ||५||

ना मुझ ग्यान भर्म नहिं कोई || ना मैं बंध्या न छूटा ||
ना सो नेम नेक नहिं ढीला || ना साबत नहिं फूटा || ६ ||

न मुझे ज्ञान है,न मुझे भरम है,न मैं बंधा हुँ,न मैं छुट्या हुँ,न मेरे कोई नियम है,न मैं ढिला हुँ,न मैं साबत हुँ,न मैं फूट्या हुँ । ||६||

ना मैं जति नहि मैं भोगी || ना मैं बांझ न ब्याया ||
ना मैं सूम नही मैं दाता || ना मैं गया न आया || ७ ||

न मैं जती हुँ,न मैं भोगी हुँ,न मैं बांझ हुँ,न मेरे संतान हुई है,न मैं सूम हुँ,न मैं दाता हुँ,न मैं कही गया हुँ,न मैं आया हुँ । ||७||

ना मैं मरूं नहिं मैं जीवुं || ना मैं अमरन परले ||
ना कोई मात पिता नहिं बंधव || ना हम हसे न कुरळे || ८ ||

न मैं मरता हुँ,न मैं जीता हुँ,न मैं अमर हुँ,न मैं जनम मरण मे आता हुँ,न मेरे माता पिता बंधू नही है,न मैं हंसता हुँ,न मैं दु:खी होता हुँ । ।।८।।

जाया नहिं कूख पण आया ।। प्रण्या नहिं कँवारा ।।
बाळक नहि देह पण छोटी ।। है पण सुं न्यारा ।। ९ ।।

मैं जाया नही हुँ,मैं खूंख मे आया हुँ,मैंने शादी की है,न मैं कंवारा हुँ,मैं बालक नही हुँ पर शरीर छोटा है और सबसे अलग है । ।।९।।

देवळ नहिं देवरे जाऊं ।। निस दिन बेठा माही ।।
धूप ध्यान प्रसाद न चाडुं ।। बिन पूजा रूँ नाही ।। १० ।।

मैं देवल मे नही रहता हुँ,फिर भी रात दिन देवरे मे बैठा हुँ और मैं किसी से किसी प्रकार का धूप ध्यान प्रसाद नही चाहता हुँ। मेरी पुजा हुये बिना रहता नही । ।।१०।।

तीर्थ वृत अेक नही करसुं ।। न्हाया बिना न रहिया ।।
अडसट तीरथ क्रोड निनाणुं ।। झूलर सब मुख कहिया ।। ११ ।।

तीर्थ व्रत एक भी नही करता व स्नान किये बिना भी नही रहता। अडसठ तीर्थ क्रोड निनानु सब झुलके सब सुख किया है । ।।११।।

ग्यान ध्यान मे कबू न बाचू ।। मून पकड नहि बैठा ।।
ना मैं बलि नहिं मैं निबेळ ।। ना कुछ हुवे सेंठा ।। १२ ।।

न मैं ज्ञान करता हुँ न,मैं ध्यान करता हुँ,न मैं कभी बाचता हुँ,न मैं मौन पकड्कर बैठता हुँ,न मैं बलवान हुँ,न मैं निर्बल हुँ, न मैं कुछ सेंठा हुवा हुँ । ।।१२।।

ना मैं पढया अपढसो नाही ।। ना मैं बकू न मुनि ।।
ना मैं केहे कसर नहिं राखी ।। नां मील फेर न कूंनी ।। १३ ।।

मैं न पढा हुवा हुँ,न अनपढ हुँ,मैं न बोलता हुँ,न मैं मौनी हुँ,न मैं कहता हुँ,न कहने मे कसर रखता हुँ, न मिलकर फेर कहता हुँ । ।।१३।।

न मैं बेद रोग सब जाणु ।। ओषध जड़ी न राखूं ।।
निस दिन घोट पींवु जड़ सुधी ।। निरख परख ले चाखूं ।। १४ ।।

मैं बैध नही हुँ फिर भी सब रोग जानता हुँ,मैं औषध जडी नही रखता हुँ फिर भी रात दिन घोटकर जड सहित पीता हुँ व देख परीक्षा कर चखता हुँ । ।।१४।।

ना मैं सूता ना मैं बैठा ।। ना मुझ भूख न धाया ।।
ना मैं धनवंत ना कुछ निर्धन ।। नां खोया नहिं पाया ।। १५ ।।

मैं न सोया हुँ,न बैठा हुँ,मुझे न भुख है न धाया हुँ,न मैं धनवान हुँ,न गरीब हुँ,मैंने न कुछ खोया न पाया है । ।।१५।।

सब को त्याग सकळ मैं खाऊँ ।। तज सकळ मैं राखी ।।
कथनी कथु सुणी नहिं काई ।। साख बोहोत मैं भाखी ।। १६ ।।

मेरे सबका त्याग है फिर भी सब खाता हुँ । सहज में ही सबको मैं छोड रखा हुँ । न मैं कथनी कथता हुँ,न मैं कुछ कथनी सुना हुँ फिर भी मैंने बहुत साख कही है । ।।१६।।

ना अहंकार नहि मैं मिलता ।। नासो गर्भ न सेणा ।।
नासो मान अमान न मेरे ।। नांसो सुणुन केणा ।। १७ ।।

मेरे न अहंकार है न मैं मिलनसार हुँ,न मैं गर्व सहता हुँ,न मेरे मान है,न मेरे मान है,न मैं सुणता हुँ,न मैं कहता हुँ । ।।१७।।

ना मैं बाद हटुँ सो नाहीं ।। चरचा करूं न न्यारा ।।
जैसे तत्त सीव सब मांही ।। यूँ जन सकळ बुहारा ।। १८ ।।

न मेरे वाद है न मैं हट्ता हुँ,न मैं चरचा करता हुँ,जो तत्त शिव याने सतस्वरुप सब के अंदर है उसका जैसे व्यवहार है ऐसे मेरा सब व्यवहार है । ।।१८।।

नां मैं तुरक नहिं मैं हिन्दु ।। ना मैं जात अजाती ।।
ना मैं बरण बिना कुळ नाही ।। ना मैं अेक न साथी ।। १९ ।।

न मैं हिंदु हुँ न मैं मुसलमान हुँ,मेरे कोई कुल बरण नही है न मैं अकेला हुँ,न मैं किसीके साथ हुँ । ।।१९।।

नां मैं खाण बिना नहिं हूवा ।। बाण नहिं मैं बोलूं ।।
ब्राम्हण नहिं कहे पण सारा ।। बिणज करूं नहीं तोलूं ।। २० ।।

मैं न चार खाण मे हू न बिना खाण के हुवा हू मेरे पाये बाणी नही है फिर भी मैं बोलता हूँ मैं ब्राम्हण नही हूँ पर उनकी सब बाते बताता हूँ मैं बिणज करता हूँ पर तोलता नही हूँ । ।।२०।।

सब के मांय सकळ सूं न्यारा ।। मरम लखे कोई बिरळा ।।
जन सुखराम देत हे हौका ।। मारत हे नित्त किरळा ।। २१ ।।

जैसे सबके अंदर सतस्वरुप होकर सबसे अलग है और उसका मरम बिरले ही जानते है इसीप्रकार से मैं सबके अंदर हूँ फिर भी सबसे अलग हूँ मेरे साधूपण का भेद बिरले ही जाणते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मेरे साधूपण के भेष की हाक आवाज संसार नित्य मारता हूँ की,सतशब्द ही कर्म व भर्म का खात्मा करता है । ।।२१।।

ग्यानी लखे नहिं कोई पिण्डता ।। षट दर्शण ना ग्यानी ।।
जन सुखराम मोय सो जाणे ।। चढया गिगन के कानी ।। २२ ।।

ज्ञानी,पंडीत खट्दर्शनी व जैनी ब्रम्ह के पद का अनुभव नहीं कर सकते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मेरे साधूपण के भेद को वेदके ज्ञानी,पंडीत खट्दर्शनी जैन साधू आदि कोई नही समझते। जो मेरे साधूपण के भेद को समझेगा वहीं गिगन घर जाएगा । ।।२२।।

पावन खाच भ्रिगुटी चाडे ।। सो नर लखे न मोई ।।

जन सुखराम अगम घर खेले ।। रात दिवस नहिं दोई ।। २३ ।।

स्वांसा को खेंचकर संखनाल के रास्ते भृकुटी मे चढनेवाले मनुष्य मुझे याने मै सतस्वरुपी साधू हू या लखते नही,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मैं अगम घर में अखंडीत रात दिन खेलता हूँ। मेरा रात दिन सरीखा होता है,रात अलग व दिन अलग ऐसा दो नही । ।।२३।।

मन हर काम नहीं वा पवना ।। सुरत निरत नही अेको ।।
जन सुखराम देह सुं न्यारा ।। परे परम पद देखो ।। २४ ।।

परम पद मे मन,कामना,श्वासा,सुरत,निरत ये एक भी नही है। वो पद देही से अलग है उस परम पद को देखो,ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।२४।।

तपसी तपे तपस्या साझे ।। फिर आचार चलावे ।।
जन सुखराम साध गत झीणी ।। वो पंथ हात न आवे ।। २५ ।।

तपसी तपस्या करने की साधना करते है,आचार रखते है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मेरी साधूपनकी गती झीणी है । वह जती,तपस्वी,आचार्यो के समझ मे नही आती । ।।२५।।

जोगी जंगम फरक फकिरा ।। षट दर्शण जुग सारा ।।
जन सुखराम साध गत झीणी ।। अे नहिं लखे लिगारा ।। २६ ।।

जोगी,जंगम,फकीर,खट्दर्शनी व सारा जगत मेरे साधू गती को झीणी याने सतस्वरुप गती को ये नही लख सकते, ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।२६।।

जंतर मंतर बोळा साझे ।। देव करे बस सोई ।।
जन सुखराम साध गत झीणी ।। अेसे न लखे न कोई ।। २७ ।।

जंत्र,मंत्र व कई प्रकार से साधना कर देवतावो को वश मे कर लेते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,वे मेरे झीणी साधगत याने सतस्वरुप गती को वे एक भी नही समज सकते । ।।२७।।

पढया गुण्याँ हात नहिं आवे ।। सीख्या सुण्या न जाणे ।।
जन सुखराम साध गत झीणी ।। सत्तगुर सरण पिछाणे ।। २८ ।।

पढने से,गुनने से,सीखने से सतशब्द हाथ नही आता व नही सतशब्द को जान सकते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मेरी साधगती झीणी है,वह मेरी झीणी साधूगती सतगुरु के शरण जाकर ज्ञान धारण करने व उनकी विधी से भजन करने पर प्राप्त होती है । ।।२८।।

बिना रूप अस्थूल बिना हे ।। अरस परस का मेला ।।
जन सुखराम भेद सुत्तगुरू के ।। नांव रटयाँ व्हे भेला ।। २९ ।।

बिना शरीर के बिना रुप के सतशब्द का अरस परस अखंडीत मिलनका अनुभव होता है।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सतगुरु से भेद लेकर निजनाम का भजन करनेसे यह अनुभव होता है । ।।२९।।

रसणां रटे धम कूं बंधे ।। सुरत निरत घर लावे ।।
जन सुखराम ऊलट चड़ ऊँचा ।। हर दीदार दिखावे ।। ३० ।।

रसणा से रट्ते है,सांस उसांस में भजन करनेसे घोर बंधती है। सूरत निरत लगाकर भजन करके बंकनाल के रास्ते शब्द के साथ उलट्कर चढने से परमात्मा के दर्शन होते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।३०।।

जोडे रटे धमं कूं साझे ।। लेवे सास उसासा ।।
जन सुखराम सझे सब काया ।। करे गिगन घर बासा ।। ३१ ।।

रकार मकार का सांस उसांस में भजन करना ही घम कूं साजना है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सारे शरीर को सतशब्द से शोधकर दसवेद्वार में गिगन के घरमें वास करता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।३१।।

साध गत सोही जन जाणे ।। रटे नांव निरधारा ।।
जन सुखराम ररे मिल ममो ।। आठुं पोहोर उचारा ।। ३२ ।।

इस सतस्वरुप साधू गती को वे ही संत जानते है जो निराधार निजनाम का भजन करते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,रकार मकार याने रामनाम का आठे प्रहर याने रातदिन हर समय भजन करते है,वेही इस साधूगती को जाणते है। ।।३२।।

ररे ममे बिच भेद बिचारे ।। तज देह फिर मिलावे ।।
जन सुखराम साध गत सै नर ।। पछे कदे नहि पावे ।। ३३ ।।

रामनाम की इस विधी पर मन में शंका रखता है,कभी करता है कभी छोड देता है,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,वो इस साधू गती की प्राप्ती कभी नही कर सकता । ।।३३।।

दोनुं सबद जुगत सुं रटणा ।। ग्रभ बंधे संग मिलिया ।।
जन सुखराम पुरष ज्युं नारी ।। करे गरज मन भिलिया ।। ३४ ।।

जैसा स्त्री पुरुष युक्ती से मनसे साथ करनेसे मिलनेसे गर्भ रहता है । वैसा ही ररो,ममो दोनो शब्द याने राम नाम निजमनसे युक्तीसे रट्नेसे घट्मे सतशब्द प्रगट होता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।३१।।

पंखी उडे पंख दोय जैसे ।। थिर व्हे पवन सहारे ।।
पंथी चरण दोय ते चाले ।। युँ अंछर उभे उधारे ।। ३५ ।।

पक्षी दोनों पंखो से उड्ता है व ऊपर जाकर हवा के सहारे बिना पंख हिलाये उड्ता रहता है या रास्ता चलने वाला दोनो पैरो से चलता है व वह कही स्थीर हो जाता है । ऐसे सी यह दोनो अक्षर का विधी से भजन करने पर हंस कंठसे निकलकर दसवेद्वार मे स्थीर हो

जाता है । ।।३५।।

अेक लख जतन लाख कर बंधन ।। सेंसर ओर अठयासी ।।
जन सुखराम भेद बिन भगती ।। कटेन जम की पासी ।। ३६ ।।

कोई लाखो जतन करता है, लाखो तरह के बंधन कर लेता है,अठ्यासी हजार ऋषियों के ज्ञान को धारण कर लेता है,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,भेद से भजन किए बिना उसकी जन्म मरण की फाँसी नही कट्टी है । ।।३६।।

।। छंद अर्ध भुजंगी ।।

गुरू सेव कीने ।। सबे भेद दीने ।। किये ग्यान सारा ।।
ब्रम्ह हूँ बिचारा ।। भिदे भेद मांही ।। लिये सरण जाहि ।।३७।।

सतगुरु का शरण लेनेसे सतस्वरुप ब्रम्ह के सभी भेद मिलते है। सतस्वरुप ब्रम्ह क्या है इसका सारा ज्ञान मिलता है। यह सतस्वरुप ज्ञान का भेद सतगुरु के जानेपे तनमे भेदती है व तनमे सतशब्द का अनुभव होता है। ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।३७।।

दिये ग्यान मोही ।। सबे सुख होई ।। बिना ब्रम्ह प्रसंग ।।
सबे झूठ दरसंग ।। कहे देव सारा ।। ब्रम्ह हूँ उचारा ।। ३८ ।।

मुझे ऐसा ज्ञान दिया है मुझे सब सुख हो गये,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सतस्वरुप ब्रम्ह के प्राप्ती के बिना सब साधन झूठे है। सब देवता कहते है की,हम भी मनुष्य जन्म की प्राप्ती कर सतस्वरुप ब्रम्ह की प्राप्ती करे । ।।३८।।

सबे देव सेवा ।। निजो तत्त भेवा ।। भजो राम रामंग ।।
तजो सब कामंग ।। गुरू भेद दीया ।। सिखो जाय लीया ।। ३९ ।।

निज तत्त याने सतस्वरुप ब्रम्ह पद की प्राप्ती का भेद मिल जाता है। तो सब देवताओंकी सेवा हो जाती है। इसलिए राम राम भजो सब कामना छोडो। ऐसा सतगुरु महाराज ने भेद दिया व शिष्य ने याने मैंने धारण किया । ।।३९।।

खण्डे खण्ड जाई ।। सबे पिण्ड मांई ।। लखे गुरू ग्यानं ।।
पिण्डे भेव जानग ।। भजो राम रामंग ।। तजो सब कामंग ।। ४० ।।

खंड में है वो पिंड में है। सतगुरु के ज्ञान से ही पिंड का भेद जान सकते है। इस तरह सब कामनाओं को छोड्कर रामजी की भक्ति याने राम राम करो । ।।४०।।

मिले मन मांही ।। निजो मन जाहि ।। निर्भे नांव सुझे ।।
गुरू जाय बूझे ।। तबे लेन लागा ।। भिनो भर्म भागा ।।४१।।

निजमन लगाकर निजमन से भक्ति करनेपर निर्भय नाम याने परमात्मा के निज नाम की प्राप्ती होती है। सतगुरु से भेद पुछ्नेपर ही भक्ति करने से सब भरम व द्वेतपना मिट्टा है । ।।४१।।

लीया पण साधंग ।। नांव आराधंग ।। भजो राम रामंग ।।
तजो सब कामंग ।। हमे हीर पाया ।। निरखे मंझ काया ।। ४२ ।।

इसतरह साधना करनेसे नाम की भक्ति होती है। इसलिए सब कामनाओं को छोड्कर राम राम करो। मैंने हिरा रुपी सतशब्द पाया,वह मैं मेरे शरीर मे देख रहा हुँ। ।।४२।।

भयो उजियारो ।। गयो तिंबर सारो ।। सबे चीज सूझे ।।
सो सो आय बुझे ।। तिहुँ लोक सारे ।। भये उजियारे ।। ४३ ।।

वैराग्य ज्ञान रुपी सूर्य के उदय होने से मायावी अज्ञान रुपी सब अंधकार मिट गये है। मैं सतगुरु से जो जो चीज पुछ्ता था वे सभी चीजे शरीर मे दिखने लगी। वो भेद पिंड मे ही तीनो लोग प्रकाशीत होकर दिखने लगे । ।।४३।।

सातु दीप सोई ।। नव खंड होई ।। बरसे मेघ भारी ।।
गरजे गेण सारी ।। चले नीर धारा ।। पिये बन सारा ।। ४४ ।।

सात द्वीप व नवखंड ये सारे शरीर में दिखने लगे। शरीर में मेघ का भारी बरसना व गगन का गरजना शरीर में सुणाई देने लगा। सारे शरीर रग,रोम में रामनाम रुपी जल की धारा मेरे शरीर में सभी ओर चलने लगी व मेरे बन रुपी शरीर में रोम रोम में ररंकार होने लगी । ।।४४।।

फुले बन जाहि ।। बडे पोप मांहि ।। बोले मोर सूवा ।।
भंवर गुंज हूवा ।। चली नेम सिलता ।। न्हावे नीर भिलता ।। ४५ ।।
भरे नीर जाहि ।। सातुं सर माहिं ।। अेसी अेक देखी ।।
कहुँ नेण पेखी ।। जमी भीज बरसे ।। गिगन जाय दरसे ।। ४६ ।।
अेसा नीर चले ।। नदी पूर छीले ।। मुदे तीर जाणी ।।
चढे पाड़ पाणी ।। तिहुँ लोक माहि ।। बर्से बस नाही ।। ४७ ।।
थके बिणज बुहारा ।। तिहुँ लोक सारा ।। हाळी हळ छूटे ।।
गिगन मेघ बूटे ।। पडयो काळ भारी ।। मुंवा पाँचु हारि ।। ४८ ।।
भातो लेर आई ।। जिमे कुण भाई ।। चली भतवारी ।।
उलट सुरत नारी ।। अबे पीर जाई ।। पिता घर आई ।। ४९ ।।
जुगे आस थाकी ।। किया मन साखी ।। कहे सुखरामा ।।
मिले हर शामा ।। आदु घर आया ।। परम पद पाया ।। ५० ।।

।। इति साध भेद को अंग संपूरण ।।